पल्सर की खोज पहले एक सिपाही ने की थी

पल्सर यानी पल्सेटिंग रेडियो तारे हैं या यों कहें कि पल्सर रेडियो तरंगों के ऐसे स्रोत हैं जो धड़कते रहते हैं। इनकी खोज के लिए नोबल पुरस्कार एंटनी हेविश को दिया गया था हालांकि इनका अवलोकन उनकी एक छात्रा बेल बर्नेल ने किया था। उस समय भी इस बात को लेकर काफी विवाद हुआ था कि अकेले एंटनी हेविश को नोबल पुरस्कार देना उचित नहीं था।

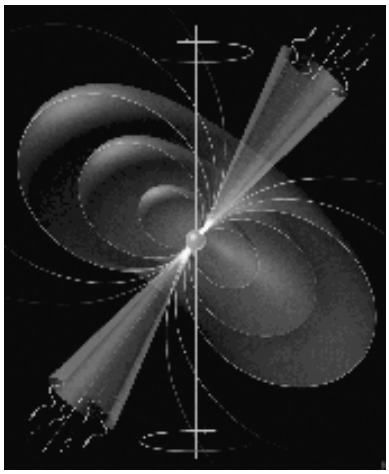

मगर अब इस कहानी में एक नया मोड़ आया है। 81 वर्षीय चार्ल्स शिस्लर ने उजागर किया है कि उन्होंने पल्सर्स का अवलोकन 'अधिकारिक' खोज से काफी पहले1968 में किया था और इस बात को अपनी लॉग बुक में रिकॉर्ड भी किया था। शिस्लर 1967 में अमरीकी फौज में थे और उन्हें प्रतिदिन चार घंटे राडार पर किसी भी मिसाइल वगैरह पर नज़र रखनी होती थी। वे जिस राडार नज़र रखते थे वह साइबेरिया की टोह लेता था। रोज़ाना 4 घंटे बैठे-बैठे बोर होकर वे अन्य अवलोकन भी करने लगे। उन्होंने देखा कि उनके राडार पर एक निहायत कमज़ोर संकेत आ रहा है। और यह संकेत हफ्तों तक आता रहा।

फिर एक दिन शिस्लर ने पाया कि वह संकेत पिछले दिन की अपेक्षा 4 मिनट पहले आया। शिस्लर जानते थे कि तारे प्रतिदिन 4 मिनट पहले उदय होते हैं।

शिस्लर ने उस संकेत की स्थिति की मोटी-मोटी गणना की और आंकड़े लेकर अलास्का विश्वविद्यालय पहुंचे। वहां खगोल शास्त्र के एक प्रोफेसर ने उन्हें बताया कि जो स्थान वे बता रहे हैं वह क्रैब नेबुला में है जो पृथ्वी से करीब 6300 प्रकाश वर्ष की दूरी पर है। प्रोफेसर से उन्हें यह भी पता चला कि आकाश में ऐसे अन्य रेडियो स्रोतों की स्थिति क्या है। अब तो वे नियमित अवलोकन करने लगे। शिस्लर ने हाल ही में बताया कि इस दौरान उन्होंने ऐसे करीब एक दर्ज़न स्रोत देखे मगर उस समय उन्हें पता नहीं था कि ये हैं क्या। वह तो जब उन्होंने रेडियो पर सुना कि पल्सर की खोज हुई है तो उन्हें अपने अवलोकनों का मतलब समझ में आया।

शिस्लर का कहना है कि वे पल्सर की खोज का कोई दावा नहीं कर रहे हैं। उन्हें तो इस बात का दुख है कि उनका विज्ञान जगत से इतना संपर्क क्यों नहीं रहा कि वे उसमें योगदान दे पाते। यदि ऐसा होता तो वे कम-से-कम अपने अवलोकनों को साझा कर पाते। बर्नेल बैली का कहना है कि शिस्लर की लॉग बुक को पल्सर अवलोकन की पहली घटना के रूप में सम्मान दिया जाना चाहिए। ***(स्रोत फीचर्स)***